अध्याय द्वितीय

संबंधित अध्ययनों का पुनरीक्षण

संबंधित अध्ययनों का पुनरीक्षण

2 1 प्रस्तावना

अतीत में किये गये शोध कार्यो पर पुनर्विचार करने से शोधकर्ता अपने विषय के बारे में समझ पैदा करने के साथ-साथ अपने में एक सही दृष्टिकोण विकसित कर लेता है। अत: आवश्यक है कि प्रत्येक शोधकर्ता विषय से संबंधित पूर्व अध्ययनों पर पुनर्विचार करे जिससे उसे उन अध्ययनों की प्रक्रिया जैसे :- शोध उपकरण तैयार करना, आँकड़े एकत्र करना, उनका विश्लेषण करने में सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग और उनकी व्याख्या आदि के बारे में स्पष्ट समझ पैदा हो जाये।

रेडियो द्वारा शैक्षिक प्रसारण पर विदेशों और भारत में कई अध्ययन हुये है। भारत में अधिकांश अध्ययन शैक्षिक प्रसारण की उपयोगिता पर किये गये है और कुछ अध्ययन प्रसारण कार्यक्रमों की योजना, उत्पादन और मूल्यांकन पर भी किये गये हैं परन्तु इनकी संख्या बहुत कम है। रेडियो द्वारा शैक्षिक प्रसारणों का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर प्रभाव हेतु वैज्ञानिक अध्ययन विषय पर बहुत कम शोधकार्य हुये हैं। विषय से संबंधित पूर्व में किये गये अध्ययनों का विवरण निम्नलिखित है:

2 2 विदेशों में किये गये अध्ययन

फ्रेन्ड गाल्डा और सीरी (1980) ने थाइलैण्ड में कक्षा 2 के छात्रों पर "रेडियो द्वारा गणित विषय का शिक्षण" पर अध्ययन किया। 16 स्कूलों के बच्चों को प्रतिदिन गणित के पाठ प्रसारित किये गये। अंत में पोस्ट टेस्ट आयोजित किया गया। तुलनात्मक अध्ययन के लिये उतने ही बच्चों को जिन्होंने रेडियो प्रसारित पाठों का लाभ नहीं लिया था को भी पोस्ट टेस्ट दिया गया। अध्ययन में पाया गया कि जिन्होंने रेडियो पाठों का लाभ लिया वे श्रेष्ठ थे।

सन् 1984 में निकारागुआ में इसी प्रकार का गणित विषय पर रेडियो प्रसारित पाठों का अध्ययन किया गया और इसी के समान परिणाम प्राप्त हुये।

क्रिस्टेन्सन (1985) ने अंग्रेजी भाषा में कक्षा एक से तीन के बच्चों में सुनना, बोलना और पढ़ना कौशल विकसित करने के लिये रेडियो पाठों का प्रसारण किया और साथ ही प्रिन्ट सामग्री का भी उपयोग किया। अध्ययन में एक कन्ट्रोल समूह को भी शामिल किया गया था। मूल्याकन में पाया गया कि रेडियो समूह के बच्चों की उपलब्धि कन्ट्रोल समूह के बच्चों से श्रेष्ठ थी।

23 भारत में किये गये अध्ययन

आल इण्डिया रेडियो शोध इकाई (1972) ने एक शाला प्रसारण कार्यक्रमों का एक सर्वेक्षण किया और पाया कि शाला में रेडियो पाठों को योजनाबद्ध तरीके से नहीं सुना जाता है। जिन कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है वे हैं, रेडियो सेट्स की सही देखभाल न होना, माइक्रोफोन और एम्पलीफायर की कमी, उचित पर्यावरण व पर्याप्त स्थान का अभाव, भीड़ भरी कक्षायें, शिक्षकों का परीक्षा केन्द्रित दृष्टिकोण तथा उचित प्रतिपुष्टि का न मिलना आदि।

श्रीवास्तव (1974) ने शाला प्रसारणों का देश के पश्चिमांचल, म.प्र., गुजरात व महाराष्ट्र प्रदेशों में अध्ययन किया। अध्ययन के प्रमुख उद्वेश्य थे - शाला प्रसारण की वर्तमान स्थिति से अवगत होना, प्रक्रिया से सबंधित व्यक्तियों की राय प्राप्त करना,शाला शिक्षा में रेडियो प्रसारण का स्थान भूमिका और कठिनाईयां और कार्यक्रम को प्रभावपूर्ण बनाने के लिये व्यवहारिक सुझाव देना और

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

अध्ययन के प्रमुख परिणाम इस प्रकार पाये गये :-

शिक्षकों, छात्रों व प्रशिक्षकों ने रेडियो से प्रसारित होने वाले पाठों की सराहना की और कहा कि ये प्रसारण बालकों में प्रेरणा व रुचियां पैदा करने में सहायक है, बहुत सी शालाओं में रेडियो अच्छी स्थिति में था मगर स्थानाभाव के कारण उनका सदुपयोग न हो सका,केवल कुछ शालाओं में ही रेडियो पाठों को सुनने का समय निर्धारित किया गया था,शाला प्रसारण शिक्षकों के कार्य में सहायक था, छात्रों को शाला प्रसारण कार्यक्रम में सहभागी नहीं बनाया गया था,कुछ विषयों में पाठ अधिक प्रसारित हुये थे जबकि कुछ में बहुत कम एवं अधिकांश शालाओं को आकाशवाणी केन्द्रों ने कार्यक्रमों की पुस्तिका उपलब्ध नहीं करवायी थी।

मोहन्ती एव मोहन्ती ने (1975) में शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र के माध्यम से रेडियो द्वारा प्रसारित शाला कार्यक्रमों का आकलन किया था जिसका प्रमुख उद्येश्य था :-

-कार्यक्रमों की सफलता व असफलता के कारण जानना व शिक्षक प्रशिक्षार्थियों द्वारा इन कार्यक्रमों की कितनी सराहना की गयी।

इस अध्ययन के निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुये :-

विषय आधारित शैक्षिक कार्यक्रम अधिक प्रभावी थे,सहभागियों ने उन्हीं कार्यक्रमों को सराहा जिनकी गति सामान्य थी क्योंकि यह गति उनके समझने में सहायक थी,इस कार्यक्रम में प्रतिदिन काम आने वाली वस्तुयें जैसे साबुन,माचिस, मोमबत्ती, स्याही आदि बनाने की प्रक्रिया शामिल की गयी थी।

एन.सी.ई.आर.टी. (1975) के शैक्षिक तकनीकी केन्द्र (सी.आई.ई.टी.) ने जयपुर में शाला प्रसारण ईकाई के कार्य और उसकी उपयोगिता पर एक अध्ययन किया। अध्ययन दो भागों में किया गया था। अध्ययन के प्रथम भाग के उद्येश्य थे - शाला प्रसारण की संख्या व प्रकृति का

पता लगाना, इकाई में कर्मचारियों की स्थिति, उनका प्रशिक्षण तथा उनकी उपयोगिता ज्ञात करना।अध्ययन के दूसरे भाग को केस स्टडी के रुप में लिया गया। अध्ययन में प्रश्नावली, साक्षात्कार, प्रपत्र और स्थानीय मुलाकात का प्रयोग किया गया। शाला प्रसारण की उपयोगिता सम्बन्धी परिणाम निम्नलिखित थे:

- केवल 11% शालायें ही रेडियो का शिक्षण में उपयोग कर सकीं।
- छात्रों से जब पूछा गया कि कितनी बार रेडियो प्रसारित पाठ सुने तो वह इसका उत्तर न दे सके।

दूसरे चरण का अध्ययन महाराष्ट्र के जलगांव जिले में 1977 में प्राथमिक शाला प्रसारण कार्यक्रम पर किया गया था। यह केस स्टडी के रुप में था। इस अध्ययन के प्रमुख उद्येश्य थे कार्यक्रम की उपयोगिता, चेतना, सफलता के कारण, विषय चयन, विभिन्न संस्थाओं का आपसी समन्वय और शिक्षकों का रेडियो द्वारा प्रसारित पाठों के प्रति दृष्टिकोण। प्रादर्श के रुप में 42% शालाओं को लिया गया था। तुलना के लिये 27% उन शालाओं को लिया गया था जिनको परियोजना में शामिल नहीं किया गया था।

इस अध्ययन का परिणाम यह रहा कि 92% परियोजना -शालाओं ने रेडियो प्रसारित पाठों का उपयोग किया जबकि गैर परियोजना शालाओं द्वारा मात्र 25% ही उपयोग किया गया।

इन परिणामों के प्रमुख कारण थे:

- परियोजना अधिकारियों द्वारा छात्रों और शिक्षकों को रेडियो पाठों को सुनने की प्रेरणा व योजनाबद्ध कार्यक्रम प्रसारण,
- रेडियो सेट के साथ 9 वोल्ट की शुष्क बैटरी का प्रदाय,
- रेडियो सेट की उचित देखभाल,

- उत्तम किस्म का प्रसारण और
- कार्यक्रमों का मूल्यांकन व प्रति पुष्टि आदि।

सिंह एवं शुक्ला (1980) ने सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी.,नई दिल्ली ने आकाशवाणी, नई दिल्ली के कार्यक्रमों की अच्छाईयां, कमियां व उनकी उपयोगिता का अध्ययन किया था। कुछ चुने हुये कार्यक्रमों की व्यापकता एवं शालाओं में उनकी प्रभावपूर्ण उपयोगिता, कार्यक्रमों की योजना, शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन आदि विषय के उद्येश्य थे।

प्रदत्तों का संकलन साक्षात्कार प्रपत्र के माध्यम से किया गया। इसमें शिक्षकों, सबंधित आकाशवाणी अधिकारियों को शामिल किया गया था। पूर्व व पश्चात् परीक्षणों का आयोजन किया गया था जिससे कि छात्रों का ज्ञान, समझ, विषय की अवधारणा व शब्दावली का मापन किया जा सके। 250 प्राथमिक व माध्यमिक स्कूलों के छात्रों को इसमें शामिल किया गया था।

रेडियो कार्यक्रमों की उपयोगिता एवं समझबूझ से संबंधित अध्ययन के निम्नलिखित परिणाम सामने आये :

- कक्षा 6 के पाठों की उपयोगिता ऊंची कक्षाओं की तुलना में सर्वाधिक हुयी।
- छात्र कार्यक्रम के विषय को 32-42 प्रतिशत ही समझ सके।
- कार्यक्रम सुनने के बाद पूर्व- परीक्षण में छात्रों की उपलब्धि 7-11 प्रतिशत थी जबकि पश्चात् परीक्षण में उनकी उपलब्धि बहुत कम पाई गयी।
- शाब्दिक ज्ञान एवं अवधारणा निर्माण में छात्रों की उपलब्धि बहुत कम पाई गयी। अधिकांश उपलब्धि उनकी यथार्थ सूचनाओं में ही पाई गयी थी

बिस्वाल (1981) ने अपनी पी.एच.डी. के शोध में स्कूल प्रसारण कार्यक्रमों की प्रभावपूर्ण उपयोगिता पर अध्ययन किया था। इस अध्ययन के प्रमुख उद्येश्य थे।:-शाला प्रसारण कार्यक्रमों द्वारा शैक्षिक उद्येश्यों की प्राप्ति,प्रसारित किये गये कार्यक्रमों की सख्या, विषय वस्तु की पूर्णतः

एवं कार्यक्रमों की गुणवत्ता का अध्ययन,शाला द्वारा कार्यक्रम आयोजन में सुविधायें प्रदान करना,शाला प्रसारण कार्यक्रमों को प्रभावपूर्ण बनाने के लिये शैक्षिक रणनीति तैयार करना और रणनीति के प्रति छात्रों और शिक्षकों की प्रतिक्रिया मालूम करना।

इस अध्ययन के प्रमुख परिणाम निम्नलिखित थे:

- पाठ्यवस्तु पूर्ण करने के लिये प्रसारित कार्यक्रमों की कम संख्या थी,
- सभी विषयों पर प्रसारण मे समान बल नहीं दिया जाना,
- 62% शालाओं द्वारा शाला-प्रसारण कार्यक्रमों का लाभ नहीं उठा पाना,
- 46 प्रतिशत छात्रों द्वारा रेडियो प्रसारण कार्यक्रम कक्षाओं में बैठकर सुन पाना और,
- स्क्रिप्ट लेखकों को किसी प्रकार का पूर्व प्रशिक्षण नहीं दिया जाना।

गोयल (1982) ने शाला प्रसारण पर एक अध्ययन किया था। इसमें देश के 35 ऑल इण्डिया रेडियो स्टेशनों जो शाला प्रसारण कार्यक्रम से संलग्न है, को शामिल किया गया था। इस अध्ययन के प्रमुख उद्येश्य थे : शाला कार्यक्रमों को प्रसारित करने वाली इकाई के कार्यो का अध्ययन,शालाओं में प्रसारित कार्यक्रमों की उपयोगिता एवंशाला प्रसारण कार्यक्रमों में शिक्षा महाविद्यालयों की भूमिका की संभावनाओं का अध्ययन।

स्क्रिप्ट लेखकों, कार्यक्रम तैयार करने वालों (निर्माता), शिक्षकों, छात्रों, मुख्याध्यापकों व शिक्षा महाविद्यालयों के प्राचार्यो को प्रश्नावलिया देकर सूचना एकत्र की गयी थी। साथ ही एक अवलोकन प्रपत्र द्वारा कार्यक्रमों का अवलोकन और साक्षात्कार भी लिये गये थे ।अध्ययन के जो प्रमुख परिणाम सामने आये उनका विवरण इस प्रकार है :

- शाला प्रसारण इकाईयों एवं राज्य के शिक्षा विभागों में कार्यक्रम आयोजन के लिये आपसी समन्वय बहुत कम था।
- अधिकांश प्रसारित कार्यक्रमों के उद्येश्य इकाई द्वारा स्पष्ट नहीं किये गये थे।
- पाठ्यक्रम का बहुत कम हिस्सा इसके द्वारा पूरा किया गया था।
- 78% रेडियो स्क्रिप्ट लेखक अप्रशिक्षित थे।
- शालाओं में रेडियो पाठ सुनने के लिये कोई भी कालखण्ड शाला समय-चक्र में नहीं रखा गया था।
- शिक्षा-महाविद्यालयों के प्राचार्यो का सुझाव था कि जो शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं वे शाला के लिये प्रसारित पाठों को सुनें उनका आकलन करें और आकाशवाणी कार्यालय को अपने सुझाव दें।

मोहन्ती (1984) ने प्राथमिक शाला रेडियो कार्यक्रमों की गुणात्मकता पर एक अध्ययन किया। अध्ययन के लिये प्रदत्त संकलन हेतु प्रश्नावली का प्रयोग किया गया था। 15 दिन तक प्राथमिक शिक्षकों एवं शिक्षाविदों ने कार्यक्रम का अवलोकन कर उनके आंकडे एकत्र किये गये थे। अध्ययन के प्रमुख उद्येश्य थे : - प्राथमिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण में रेडियो कार्यक्रमों की उपयोगिता, रेडियो कार्यक्रमों का शिक्षकों व छात्रों पर प्रभाव, कार्यक्रम की सफलता व कमियों के कारण, रेडियो कार्यक्रम का स्तर एवं उसकी गुणवत्ता और रेडियो कार्यक्रमों में सुधार लाने के लिये कुछ व्यवहारिक सुझाव।

अध्ययन के मुख्य परिणाम इस प्रकार रहे :

- राष्ट्रभक्ति के गीतों की गुणवत्ता आवाज, गति, संगीत के सन्दर्भ में सामान्य किस्म की थी।
- लोकगीतों की गुणवत्ता आवाज, गति व संगीत की दृष्टि से सामान्य थी।
- ऐतिहासिक घटनाओं के वर्णन की गुणवत्ता अच्छी थी।
- रेडियो पर प्रसारित किस्से कहानियों की गुणवत्ता अच्छी थी
- इन कार्यक्रमों से बालकों के ज्ञान में वृद्धि हुयी।

- 6 दिन के कार्यक्रमों में से 5 दिन के कार्यक्रमों में जीवन से संबंधित अनुभव एवं पर्यावरण की सुरक्षा से संबंधित पाठों का प्रसारण था।
- समस्त कार्यक्रमों के माध्यम से बालकों में गुणों का विवेचन करने की योग्यता का विकास हुआ और साथ ही वे सृजनशीलता से परिचित हुये।

सुदामे, जी.आर. और गोयल, डी.आर. (1988) ने बड़ौदा जिले में शाला प्रसारण कार्यक्रम का एक अध्ययन किया। अध्ययन में कार्यक्रम के प्रति संतोष प्रकट किया गया, साथ ही उसकी कुछ कमियों का भी वर्णन किया गया। कार्यक्रम की अच्छाइयों में से एक अच्छाई यह देखी गयी कि लगभग 85% शालाओं में रेडियो सेट्स उपलब्ध थे। परन्तु 20% स्कूलों के कालखण्ड में प्रसारण को सुनने के लिये कोई स्थान नहीं था। अधिकांश पाठ पाठ्य पुस्तकों के विषयों पर केन्द्रित थे। अधिकांश आलेख लेखकों को प्रशिक्षण की आवश्यकता सुझायी गयी।

गिरी, ए.पी. (1990) ने शाला प्रसारण कार्यक्रम की समस्यायें एवं उनकी संभावनाओं पर अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि रेडियो प्रसारित पाठों की उपयोगिता ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में अधिक है। ग्रामीण क्षेत्रों के चौथाई शालाओं के समय चक्र में अलग से एक कालखण्ड रेडियो पाठों को सुनने के लिये दर्शाया गया था।

मोहन्ती, एम.के. (1990) ने अपने अध्ययन में पाया कि अधिकांश लाभान्वित होने वाले शहरी क्षेत्रों के छात्र थे। इसी वर्ष दूसरे अध्ययन में पाया कि शाला प्रसारण कार्यक्रम छात्रों के लिये व्यापक एवं संतोषप्रद नहीं था। जबकि अन्य कार्यक्रमों की प्रकृति जैसे : नाटक, कहानी के कार्यक्रमों में व्यापकता पायी गयी।

हरजल, एन. (1992) ने विज्ञान प्रसारण पाठों का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि 20 से 30 प्रतिशत विद्यार्थी इस कार्यक्रम को सुनते हैं। इन्हीं विद्यार्थियों में से 64% विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम को सफल एव आसानी से समझने योग्य बताया।

Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal

मीना बेमानी (1991) ने 1986 से 1990 तक की अवधि में आकाशवाणी जयपुर से कक्षा 6 से कक्षा 11 तक के लिये प्रसारित पाठों का विश्लेषण किया और पाया कि पाठों की कक्षा व विषयवार संख्या तथा प्रदत्त समय में भिन्नता थी। विद्यालय प्रसारण में कोई विशेष नीति या आधार निर्धारित कर कार्यक्रमों का संचालन नहीं किया गया।

राजस्थान की ममता चतुर्वेदी (1992) ने विज्ञान शिक्षण के लिये रेडियो अनुदेशन विधि एवं रेडियो विहीन द्वारा अनुदेशित विधि की प्रभावोत्पादकता का तुलनात्मक अध्ययन कर पता लगाया कि रेडियो द्वारा प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रम वर्तमान विद्यार्थियों के लिये महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। रेडियो प्रसारणों द्वारा अधिगम की दृष्टि से चित्राभिव्यक्ति से अधिक स्पष्टता एवं प्रभावशीलता प्रदान की जा सकती है। रेडियो द्वारा कक्षा समूह में प्रभावशाली अध्ययन किया जा सकता है।

राजमल जैन (1992) ने रेडियो प्रसारण की शिक्षा क्षेत्र में उपलब्धि शीर्षक अध्ययन में बताया कि विद्यालय प्रसारण कार्यक्रमों से जीव विज्ञान एवं इतिहास विषयों में छात्रों की उपलब्धि में वृद्धि हुई है, जबकि वाणिज्य विषय में छात्रों की उपलब्धि पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा।